NORTH POINT SENIOR SECONDARY BOARDING SCHOOL
WORKSHEET
CLASS - X
HINDI

क्षितिज (गद्य–खंड)

1 नेताजी का चश्मा

स्वयं प्रकाश (1947)

पाठ-परिचय :

चारों ओर सीमाओं से घिरे भू-भाग का नाम ही देश नहीं होता। देश बनता है, उसमें रहने वाले सभी नागरिकों, नदियों, पहाड़ों, पेड़-पौधों, वनस्पतियों तथा पशु-पक्षियों से, और इन सबसे प्रेम करने तथा इनकी समृद्धि के लिए प्रयास करने का नाम देशभक्ति है। 'नेताजी का चश्मा' कहानी कैप्टन चश्मे वाले के माध्यम से देश के करोड़ों गुमनाम नागरिकों के योगदान को रेखांकित करती है, जो इस देश के निर्माण में अपने-अपने तरीके से योगदान देते हैं। कहानी यह कहती है कि बड़े ही नहीं, बच्चे भी इसमें शामिल हैं।

पाठ का सार

हालदार साहब को हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में एक कस्बे से गुज़रना पड़ता था। कस्बा बहुत बड़ा न था। उसमें कुछ पक्के मकान, एक बाज़ार, लड़कों का एक स्कूल, लड़कियों का एक स्कूल, सीमेंट का एक छोटा-सा कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक टीन नगर पालिका भी थी, जो कभी कोई सड़क पक्की करवा देती, कभी पेशाबघर, कभी कबूतरों की छतरी बनवा देती, तो कभी कवि-सम्मेलन करवा देती। इसी नगर पालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने 'शहर' के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। यह कहानी उस प्रतिमा के एक छोटे-से हिस्से के बारे में है।

लेखक को पूरी बात तो पता नहीं, लेकिन उन्हें लगता है कि देश के अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी नहीं होने या अच्छी मूर्ति की अनुमानित लागत उपलब्ध बजट से कहीं ज़्यादा होने के कारण या बोर्ड की शासनावधि समाप्त होने की दशा में किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा। अंत में कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के ड्राइंग-मास्टर मोतीलाल (काल्पनिक नाम) को ही यह काम सौंप दिया गया होगा, जिन्होंने महीने-भर में मूर्ति बनाकर देने का विश्वास प्रकट किया होगा।

मूर्ति संगमरमर की थी—टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची सुंदर मूर्ति थी। फ़ौजी वर्दी में नेताजी सुंदर, मासूम और कमसिन लग रहे थे। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो.....' आदि याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय कोशिश थी। मूर्ति में केवल एक कमी थी, जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर संगमरमर का चश्मा नहीं था। एक साधारण और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। कस्बे से गुज़रते समय हालदार साहब ने पहली बार जब इस मूर्ति को देखा, तो हैरान हुए। उन्होंने देखा कि मूर्ति तो पत्थर (संगमरमर) की थी, लेकिन चश्मा वास्तविक था। कस्बे से निकलने के बाद भी हालदार साहब मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे। अंत में वे इस निर्णय पर पहुँचे कि कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय है। महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, अपितु उस भावना का है, जिस भावना से उस मूर्ति को बनवाया गया, वरना देशभक्ति आजकल मज़ाक की वस्तु बनती जा रही है।

दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे, तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। ध्यान से देखने पर उन्हें पता चला कि चश्मा दूसरा है। पहले मोटे फ्रेम वाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। उनके मन में विचार आया कि मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती, चश्मा तो बदल सकती है। तीसरी बार भी नया चश्मा था। अब तो हालदार साहब को आदत-सी पड़ गई। जब भी कस्बे से गुज़रते चौराहे पर रुकना, पान खाना और मूर्ति को ध्यान से देखना। एक बार हालदार साहब अपने आश्चर्य को रोक न पाए तो पान वाले से पूछ लिया कि नेताजी का चश्मा हर बार कैसे बदल जाता है? पान मुँह में ठूसे हुए, काला मोटा, खुश-मिज़ाज पानवाला पहले तो आँखों-ही-आँखों में हँसा। उसकी तोंद थिरकी, पान थूका और अपने लाल-काले दाँत दिखाकर बोला कि यह काम कैप्टन चश्मेवाला करता है। हालदार साहब जब पानवाले की बात समझ नहीं पाए, तो उसने समझाया कि जब किसी ग्राहक को चौड़े फ्रेम वाला चश्मा चाहिए तो वह कहाँ से लाएगा? उसको मूर्ति वाला दे दिया और मूर्ति पर दूसरा लगा दिया।

अब हालदार साहब को कुछ-कुछ समझ में आता है कि एक चश्मेवाला, जिसका नाम कैप्टन है, उसे नेताजी की बगैर चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है, बल्कि उसे पीड़ा पहुँचाती है, मानो बिना चश्मे के नेताजी को असुविधा हो रही हो, इसलिए वह अपनी छोटी-सी दुकान में गिने-चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता। जब किसी ग्राहक को वैसे ही फ्रेम की ज़रूरत होती, तब वह कैप्टन नेताजी की मूर्ति से क्षमा माँगते हुए चश्मा लाकर ग्राहक को दे देता। बाद में नेताजी की मूर्ति को दूसरा फ्रेम लगा देता। एक बात अभी भी हालदार साहब को समझ नहीं आई कि नेताजी का वास्तविक चश्मा कहाँ गया? पूछने पर पानवाले ने मुसकराते हुए बताया कि मास्टर बनाना भूल गया।

पानवाले के लिए यह मज़ेदार बात थी, लेकिन हालदार साहब के लिए आश्चर्यचकित तथा द्रवित कर देने वाली। उन्होंने ठीक ही सोचा था कि मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल वास्तव में कस्बे के अध्यापक थे। महीने-भर में मूर्ति बनाने का वादा निभाया। लेकिन पत्थर में पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया

Scanned with CamScanner

जाए—काँचवाला तय नहीं कर पाया या कोशिश करने पर असफल रहा होगा या बनाते समय टूट गया होगा या पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा। ये सब बातें हालदार साहब को बड़ी विचित्र और आश्चर्य भरी लगीं। इन्हीं विचारों में मस्त पान के पैसे चुकाकर चश्मेवाले की देशभक्ति के सामने सिर झुकाकर वे जीप की तरफ़ चले, फिर मुड़कर पानवाले से पूछा कि क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही? पानवाले ने पान खाते हुए हालदार साहब को ध्यान से देखा और मुसकराकर उन्हें बताया कि वह लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में! वह पागल है, देखो आ रहा है। उसी से बात कर लो। उसका फोटो कहीं छपवा दो। पानवाले द्वारा एक देशभक्त का मज़ाक उड़ाना उन्हें अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो वे अवाक् रह गए कि एक बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटा-सा संदूक और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए गली से निकला। एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका दिया। हालदार साहब को तब पता चला कि कैप्टन के पास दुकान भी नहीं है। वे चक्कर में पड़ गए और पूछना चाहते थे कि इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने और अधिक बताने से मना कर दिया। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था, काम भी था, इसलिए हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए।

दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में कस्बे से गुज़रते रहे और नेताजी की मूर्ति के बदलते हुए चश्मों को देखते रहे। कभी चश्मा गोल होता, कभी चौकोर, कभी लाल, कभी काला, कभी धूप का चश्मा, कभी बड़े काँचों वाला; तो कभी गोगो चश्मा आदि कोई-न-कोई चश्मा होता ज़रूर. .... जो कुछ क्षण के लिए हालदार साहब को आश्चर्य और प्रफुल्लता से भर देता। एक बार ऐसा हुआ कि मूर्ति के चेहरे पर कोई चश्मा नहीं था। चौराहे की अधिकतर दुकानें बंद थीं। पान की दुकान भी बंद थी। अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था। हालदार साहब ने पान खाया और धीरे-से पानवाले से नेताजी के चश्मे के बारे में पूछा। पानवाले ने उदास होकर बताया कि कैप्टन मर गया है। यह सुनकर हालदार साहब उदास हो गए। बार-बार सोचते कि क्या होगा उस कौम का, जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ त्याग देने वालों पर हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है!

पंद्रह दिन बाद हालदार साहब फिर उसी कस्बे से गुज़रे। कस्बे में घुसने से पहले उन्होंने विचार बना लिया था कि सुभाष जी की प्रतिमा तो अवश्य होगी, पर उनकी आँखों पर चश्मा नहीं होगा। मास्टर जी बनाना भूल गए और कैप्टन मर गया। उन्होंने सोचा कि आज वे रुकेंगे नहीं, पान नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। लेकिन आदत से मज़बूर उनकी निगाहें मूर्ति की तरफ़ उठ गईं। अचानक वे चीख उठे और गाड़ी रोकने के लिए कहा। गाड़ी की गति बहुत तेज़ थी। ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारी, रास्ते में चलते लोग देखने लगे। जीप अभी रुकी भी नहीं थी कि हालदार साहब कूदे, तेज़-तेज़ कदमों से मूर्ति के सामने जाकर सावधान होकर खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। इतनी-सी बात पर भावुक हालदार साहब की आँखें भर आईं।

समेटिव असेसमेंट

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं, बस्ट। और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो....' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज़ की कसर थी, जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके, तभी उन्होंने इसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुक भरी मुसकान फैल गई। वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल!

(क) प्रस्तुत अवतरण में किसकी मूर्ति की बात की जा रही है और क्यों?

(ख) किस दृष्टि से मूर्ति लगाने का यह प्रयास सफल और सराहनीय था?

(ग) मूर्ति में क्या कमी रह गई थी, जो देखते ही खटकती थी और क्यों?

2. जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई, तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है, वरना तो देश-भक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज़ होती जा रही है। दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है। पहले मोटे फ्रेमवाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतुक और बढ़ा। वाह भई! क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती, लेकिन चश्मा तो बदल सकती है।

(क) 'महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है'—लेखक इस पंक्ति द्वारा क्या कहना चाहता है?

(ख) दूसरी बार हालदार साहब ने मूर्ति में क्या अंतर देखा?

(ग) हालदार साहब का आश्चर्य क्यों बढ़ा?

Scanned with CamScanner

3. पानवाले के खुद के मुँह में पान ठुँसा हुआ था। वह एक काला, मोटा और खुशमिज़ाज़ आदमी था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर वह आँखों-ही-आँखों में हँसा। उसकी तोंद थिरकी। पीछे घूमकर उसने दुकान के नीचे पान थूका और अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाकर बोला, कैप्टन चश्मेवाला करता है।

क्या करता है? हालदार साहब कुछ समझ नहीं पाए।

चश्मा चेंज कर देता है। पानवाले ने समझाया।

क्या मतलब? क्यों चेंज कर देता है? हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए।

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।

(क) हालदार साहब की किस बात पर पान वाला आँखों-ही-आँखों में हँसा?

(ख) गद्यांश के आधार पर पानवाले का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

(ग) पानवाले ने हालदार साहब को किस प्रकार समझाया?

4. पानवाले के लिए यह एक मज़ेदार बात थी, लेकिन हालदार साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली। यानी वह ठीक ही सोच रहे थे। मूर्ति के नीचे लिखा 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल' वाकई कस्बे का अध्यापक था। बेचारे ने महीने-भर में मूर्ति बनाकर पटक देने का वादा कर दिया होगा। बना भी ली होगी, लेकिन पत्थर में पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए—काँचवाला—यह तय नहीं कर पाया होगा। या कोशिश की होगी और असफल रहा होगा। या बनाते-बनाते 'कुछ और बारीकी' के चक्कर में चश्मा टूट गया होगा। या पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा। उफ़...!

(क) कौन-सी बात पान वाले के लिए मज़ेदार और हालदार साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली है?

(ख) 'बेचारे ने महीने भर में मूर्ति बनाकर पटक देने का वादा कर दिया होगा।'—ऐसा क्यों कहा गया?

(ग) हालदार साहब चश्मे को लेकर क्या-क्या सोचते रहे?

5. हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक् रह गए। एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगाता है! हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ़ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। काम भी था। हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए।

(क) हालदार साहब को क्या अच्छा नहीं लगा और क्यों?

(ख) हालदार साहब किसे देखकर अवाक् रह गए और क्यों?

(ग) गद्यांश के आधार पर बूढ़े देशभक्त का वर्णन कीजिए।

6. पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला—साहब! कैप्टन मर गया।

और कुछ नहीं पूछ पाए हालदार साहब। कुछ पल चुपचाप खड़े रहे, फिर पान के पैसे चुकाकर जीप में आ बैठे और रवाना हो गए।

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी—जवानी-ज़िंदगी सब-कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है! दुखी हो गए।

(क) पानवाला उदास क्यों हो गया?

(ख) कैप्टन कौन था?

(ग) हालदार साहब चुपचाप रवाना क्यों हो गए?

(घ) "क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी—जवानी-ज़िंदगी सब-कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है औरअपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है!"—स्पष्ट कीजिए।

7. सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मज़बूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ़ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए।

मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

(क) प्रस्तुत गद्यांश में किसकी बात की जा रही है?

(ख) हालदार साहब मूर्ति की तरफ़ क्यों नहीं देखना चाहते थे?

(ग) हालदार साहब ने ऐसा क्या देखा जो चीख पड़े?

(घ) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

Scanned with CamScanner

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हालदार साहब जब पहली बार कस्बे से गुज़रे तो उनके चेहरे पर कौतुक भरी मुसकान क्यों फैल गई?
2. हम सभी कैसे अपने दैनिक कार्यों से किसी-न-किसी रूप में अपने देश-प्रेम को प्रकट कर सकते हैं?
3. ऐसी क्या मजबूरी थी कि नेताजी की मूर्ति बनाने का कार्य स्थानीय कलाकार को दिया गया?
4. चश्मेवाले की दीन-हीन दशा का चित्रण कीजिए।
5. इस कहानी में नगर पालिका के अधिकारियों के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है?
6. देशभक्ति की भावना आजकल मज़ाक की चीज़ क्यों बनती जा रही है?
7. यह क्यों कहा गया कि महत्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है?
8. निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। आप इन पंक्तियों को मानक हिंदी में लिखिए–

   'कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया। [NCERT]

9. आशय स्पष्ट कीजिए–

   "बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।" [NCERT]

10. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है? [NCERT]
11. निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं – [NCERT]

    (क) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।

    (ख) पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला–साहब! कैप्टन मर गया।

    (ग) कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

12. कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी-न-किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं? [NCERT]
13. उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए? [NCERT]
14. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?
15. पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए। [NCERT]
16. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!"

    कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपने विचार लिखिए। [NCERT]

17. जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था, तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए। [NCERT]
18. आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों? [NCERT]
19. 'नेताजी का चश्मा' पाठ का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
20. हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था, लेकिन बाद में तुरंत रोकने को क्यों कहा? [NCERT]

Scanned with CamScanner